सामाजिक अनुसंधान :

B.A. Part II Paper IV

Dr. Chiranjeev K. Thakur
Assistant Professor (G.T)
Department of Sociology
VSJ College, Rajnagar
Madhubani.

I

अनुसंधान, शोध, अन्वेषण अथवा गवेषण का तात्पर्य किसी विशेष जिज्ञासा के सन्दर्भ में इस प्रकार गहन अध्ययन करना है, जिससे नये सिद्धान्त का निर्माण किया जा सके अथवा वर्तमान दशाओं के अन्तर्गत प्राचीन सिद्धान्तों की सत्यता का मूल्यांकन किया जा सके।

सामाजिक शोध का तात्पर्य मानवीय क्रियाओं के सभी पक्षों से सम्बन्धित यथोचित ज्ञान का निरन्तर संग्रह करना है। सामाजिक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी समस्या, व्यवहार, घटना से सम्बन्धित आधारभूत तथ्यों का अवलोकन करके उनकी सामान्य प्रकृति को समझने का प्रयत्न करते हैं और तत्पश्चात् उन सामान्य कारणों अथवा नियमों को ढूँढने का प्रयास करते हैं जो एक विशेष घटना से सम्बन्धित कार्य कारण के सम्बन्ध को स्पष्ट कर सके। इस दृष्टिकोण से सामाजिक जीवन में व्याप्त नियमों एवं वास्तविक प्रवृत्तियों को खोज निकालना ही सच्चा शोध है।

बोगार्डस (Sociology) के अनुसार, "एक साथ रहने वाले लोगों के जीवन में क्रियाशील अन्तर्निहित प्रक्रियाओं को खोज करना ही सा० शोध है।

मौजर (Survey Methods in Social investigations) के अनुसार, "सा० घटनाओं तथा समस्याओं के बारे में नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित अनुसंधान कार्य को ही सा० शोध कहते हैं।

गिन्सबर्ग के अनुसार, "किसी समस्या को हल करने अथवा एक परिकल्पना की परीक्षा करने अथवा नयी घटना या नये सम्बन्धों को स्थापित करने के उद्देश्य से सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त कार्य विधि का प्रयोग करना ही सा० शोध है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक शोध का तात्पर्य केवल सिद्धान्त का निर्माण करना ही नहीं होता बल्कि जब कभी भी पुराने तथ्यों की प्रमाणिकता को जानने अथवा किसी घटनाओं को संचालित करने वाले नियमों को जानने का प्रयत्न किया जाता है तो ऐसे सभी प्रयत्नों की व्यवस्थित प्रणाली को ही हम शोध के नाम से सम्बोधित करते हैं।

सामाजिक शोध की विशेषताएं :- सामाजिक शोध को निम्नांकित विशेषताओं के आधार पर समझा जा सकता है —

(1) सा० शोध का तात्पर्य वैज्ञानिक पद्धतियों के उपयोग द्वारा किसी घटनाओं तथा मान्य व्यवहारों का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन करना है।

(2) सामाजिक घटनाओं तथा समस्याओं के वैज्ञानिक अथवा व्यवस्थित अध्ययन मात्र को ही सामाजिक शोध नहीं कहा जा सकता बल्कि इसका उद्देश्य नवीन ज्ञान का सृजन करना भी होता है।

(3) सामाजिक शोध इस मान्यता पर आधारित है कि कोई भी सामाजिक घटना पूर्णतया स्वतंत्र नहीं होती बल्कि कुछ अन्य घटनाओं से सम्बन्धित होती है। इस दृष्टिकोण से सा० शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विभिन्न सामाजिक घटनाओं में निहित कार्य-कारण के सम्बन्ध को ज्ञात करना है।

(4) सामाजिक शोध के अन्तर्गत नये तथ्यों की खोज करने के साथ ही पुराने तथ्यों अथवा पूर्व-स्थापित सिद्धान्तों की पुनर्परीक्षा और सत्यापन का भी कार्य किया जाता है।

(5) सामाजिक शोध एक ऐसी पद्धति है जिसका कार्य किसी परिकल्पना की उपयुक्तता की जाँच करना अथवा उसका परीक्षण करना है।

(6) आधारभूत रूप से सामाजिक शोध एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

(7) सामाजिक शोध केवल कुछ नियमों, पद्धतियों, प्रविधियों तथा उपकरणों के प्रयोग तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका सम्बन्ध नई प्रविधियों के समुचित विकास से भी है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक शोध एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा सामूहिक जीवन में व्याप्त विभिन्न प्रकार की घटनाओं की प्रकृति उनके अन्तर्सम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का पक्षपातरहित रूप से विश्लेषण करके एक सामान्य सिद्धान्त अथवा प्रवृत्ति को ज्ञात किया जा सके।